जयप्रकाश नारायण का समाजवाद एवं सम्पूर्ण क्रांति

रणजीत कुमार
शोधार्थी
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

जय प्रकाश नारायण की दृष्टि में समाजवाद :–

अपनी कृति 'समाजवाद क्यों' में जय प्रकाश नारायण ने कहा है कि समाजवाद एक व्यक्तिगत आचरण संहिता न होकर समाजिक संगठन की एक प्रणाली है। उनके अनुसार समाजवाद आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माण का सिद्धांत है। समाजवाद का उद्देश्य समाज का समन्वित विकास करना है। जे0 पी0 के अनुसार समाजवादी राज्य को मूलभूत मूल्यों की स्थापना करनी चाहिए। उन्होंने समाजवाद के माध्यम से अनेक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का समाधान निकाला है। समाजवाद का सभी जगह विकास हो, इसके लिए उन्होंने लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना पर बल दिया। वे सच्चे लोकतंत्र के हिमायती थे। उनका मानना है कि–

समाजवादी समाज की स्थापना के लिए उत्पादन के साधनों का समाजीकरण करना आवश्यक है। जे0 पी0 के अनुसार सिर्फ उद्योगों का राष्ट्रीयकरण तथा वेतन की समानता से ही समाजवाद की स्थापना नहीं की जा सकती है। उद्योगों के इस राष्ट्रीय करण ने नौकरशाही शासन स्थापित कर दिया है। समाजवादी अर्थव्यवस्था की संरचना विकेन्द्रित होनी चाहिए। इसे प्राप्त करने के लिए गृह उद्योगों कुटीर उद्योगों एवं छोटे उद्योगों को देश भर में स्थापना कर उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। तभी सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में व्याप्त असमानता को दूर किया जा सकता है। उत्पादन के साधनों पर कुछ लोगों का बहुत अधिक नियंत्रण होने से और बहुसंख्यक लोगों का उनसे वंचित रह जाने से समाजवाद की स्थापना नहीं की जा सकती।[1]

उनका विचार था कि समाजवादी समाज की स्थापना के लिए शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक साधनों का उपयोग आवश्यक नहीं हैं। इसके लिए वे अहिंसक जनान्दोलन के माध्यम से समाजवाद की स्थापना पर बल देते थे। समाजवाद की स्थापना के लिए व्यक्ति की इच्छाओं को सीमित करने की आवश्यकता है। ऐसे समाज की स्थापना दीर्घ विकास एवं प्रयत्नों पर आधारित होती है। वर्ग संघर्ष के बिना समाज में समाजवाद की चेतना मात्र दिखाई देती है। मात्र समाजवादी बुद्धिजीवियों से समाजवाद स्थापित नहीं हो सकता, इसके लिए वास्तविक शक्ति, काम करनेवाले श्रमिकों तथा पूँजीवादी समाज के शोषित वर्गो के समर्थन की बहुत आवश्यकता है। ऐसे वर्ग द्वारा शोषण का विरोध समाजिक व्यवस्था को नष्ट कर एक ऐसे समाज की स्थापना करना है, जो शोषण विहीन हो। बुद्धिजीवियों द्वारा ही आन्दोलन को विचारवाद की अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। इस प्रकार एक क्रांति तथा दूसरा लोकतांत्रिक तरीकों से समाजवाद को लाया जा सकता है। जय प्रकाश नारायण क्रंतिकारी समाजवाद के स्थान पर लोकतांत्रिक समाजवाद की आवश्यकता पर विशेष बल देते थे। भारतीय संस्कृति के मूल्यों को पूरी तरह सुरक्षित रखते हुए हम देश में समाजवादी समाज की स्थापना कर सकते है। भारत में प्रेम और साहचर्य को हमेशा प्रश्रय दिया जाता रहा है। यहाँ की संयुक्त परिवार प्रणाली और जाति व्यवस्था में हमें समाजवादी विचार देखने को मिलते हैं। इस परिस्थति में भारतीय संस्कृति और समाजवाद को एक दूसरे का विरोधी नहीं माना जा सकता।[2]

जय प्रकाश नारायण लोकतांत्रिक समाजवाद के पक्षधर थे। उन्होंने नैतिक आधार पर बहुत बल दिया। वे कहते थे– सबसे पहली बात यह है कि लोकतन्त्र की समस्या मूलतः और सर्वोपरि एक नैतिक समस्या है। लोकतंत्र के लिए संविधानों, शासन प्रणालियों, दलों और चुनावों, इन सभी बातों का महत्त्व है पर जब तक जनता में समुचित नैतिक और आध्यात्मिक गुणों का विकास नहीं हो जाता, तब तक संविधान एवं राजनैतिक प्रणालियाँ लोकतंत्र को सफल नहीं बना सकती है उनका विचार था कि सच्चा लोकतंत्र स्थापित करने के लिए हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थों का बलिदान करें, अपनी जरूरतों को सीमित करें, सार्वजनिक हित की परवाह करें और ग्रामों को स्वशासी तथा आत्मनिर्भर बनाया जाय।

महात्मा गाँधी का जय प्रकाश पर गहरा प्रभाव पड़ा था। उन्होंने इस बात को स्वीकार किया था कि राजनीति में नैतिक मूल्यों को सुरक्षित रखने की आवश्यकता है। गाँधी जी ने साधन और साध्य को एक समान मानकर बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किया था। उनका मानना था कि समाजवाद में साधनों का स्थान सर्वोपरि होना चाहिए। उनके अनुसार यदि समाजवाद का अर्थ ऐसा समाज जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाए तो मानव पशु बनकर रह जाएगा। यह विश्वास करना कि शोषण रहित समाज में सबों को पेट भर भोजन, कपड़ा और मकान मिल जाए तो सभी अपने आप ठीक हो जाएगा। यह ठीक नहीं लगता। ऐसा समाज जिसमें मानव की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाए। लेकिन मानव का स्वभाव पशु की तरह हो तो उसे समाजवाद नहीं कहा जा सकता। जय प्रकाश नारायण के अनुसार समाजवाद का लक्ष्य भी एक अच्छे समाज की स्थापना करना है और यह अच्छे साधनों से ही सम्भव है। समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना की जानी चाहिए। राजनीति सिर्फ शक्ति प्राप्त करने के लिए ही नहीं वरन् यह सेवा भाव का एक साधन है।[3] व्यक्ति और समाज दोनों का सर्वांगीण विकास होना चाहिए।

जय प्रकाश नारायन की दृष्टि में सम्पूर्ण क्रांति के मायने :–

पाँच जून को सांयकाल पटना के गांधी मैदान पर लगभग पंच लाख लोगों की अति उत्साह भरी जनसभा में देश की गिरती हालत, प्रशासनिक भ्रष्ट्राचार, महंगाई, बेरोजगारी, अनुपयोगी शिक्षा पद्धति और प्रधानमंत्री द्वारा अपने ऊपर लगाये गऐ आरोपों का सविस्तार उत्तर देते हुए जयप्रकाश नारायण ने बेहद भावतिरेक में जनसाधारण का पहली बार 'संम्पूर्ण क्रांति' क लिये आहवान किया। जे0 पी0 ने कहा–

'यह क्रांति है मित्रों! और सम्पूर्ण क्रांति है। विधान सभा का विघटन मात्र इसका उद्देश्य नहीं हैं। यह तो महज मील का पत्थर है। हमारी मंजिल तो बहुत दूर है और हमें अभी बहुत दूर तक जाना हैं।

'जे0 पी0 ने छात्रों से सम्पूर्ण क्रांति को सफल बनाने के लिए एक वर्ष तक विश्वविद्यालयों और कालेजों को बंद रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि– 'केवल मंत्रिमंडल का त्याग पत्र या विधान सभा का विघटन काफी नहीं है, आवश्यकता एक बेहतर राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण करने की है। छात्रों की सीमित मांगे, जैसे भ्रष्टाचार एवं बेरोजगारी का निराकरण, शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन आदि बिना सम्पूर्ण क्रांति के पूरी नहीं की जा सकती।' उन्होंने सीमा सुरक्षा बल और बिहार सशस्त्र पुलिस के जवानों से अपील की कि वे सरकार के अन्यायपूर्ण और गैर कानूनी आदेशों को मानने से इनकार कर दें।

जे0 पी0 ने सात जून से बिहार विधान सभा भंग करो अभियान चलाने, मंत्रियों और विधायकों को विधान सभा में प्रवेश करने से रोकने के लिए सभा के फाटकों पर धरना देने, प्रखण्ड से सचिवालय स्तर तक प्रशासन ठप्प करने, लोकशक्ति को बढ़ाने हेतु छात्र, युवक एवं जन संगठन बनाने, नैतिक मूल्यों की सदाचरण द्वारा स्थापना करने तथा गरीब और कमजोर वर्ग की समस्याओं से निपटने के लिए भी छात्रों और जनसाधारण का आह्वान किया।

जे0 पी0 का भाषण जब समापन की ओर था तभी सभास्थल पर गोलियों से घायल लगभग 12 लोग पहुंचे और सभा में तीव्र उत्तेजना फैल गई। ये राजभवन से लौटने वाली भीड़ के वे लोग थे जो पीछे रह गए थे। इन लोगों पर बेली रोड स्थित एक मकान से गोली चलाई गई थी। पटना के जिलाधीश विजयशंकर दुबे के अनुसार उस मकान में 'इन्दिरा ब्रिगेड' नामक संगठन के कार्यकर्ता रहते थे। उनमें छः व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए गए जिनमें से एक के पास से धुआँ निकलती बन्दूक और छः गोलियां बरामद की गई हैं। सभा में जिलाधीश द्वारा लिखा गया पत्र भी पढ़कर सुनाया गया, जिसमें पुलिस द्वारा तत्काल कारवाई करने तथा गोलीकाण्ड के बावजूद प्रदर्शनकारियों द्वारा शान्ति और संयम बरतने की सराहना की गई थी। विशाल जन समूह के लोग गोलीबारी से चोट खाए लोगों को देखकर इस हद तक उद्वेलित हो उठे थे कि यदि जे0 पी0 को दिया गया शान्तिपूर्ण रहने का वचन न होता और स्वयं जे0 पी0 वहां मौजूद न होते, तो शायद उस शाम इन्दिरा ब्रिगेड के दफ्तर से लकर विधान भवन सचिवालय आदि, सब कुछ जल गया होता। सभा स्थल पर जे0 पी0 ने कहा– 'देखों ऐसा नहीं होना चाहिए कि आप लोग धारा में बह जाएं, उस स्थान पर जाकर आग लगा दें। वचन देते हो न कि शान्त राहोगें?' लाखों ने हाथ उठाकर, सिर हिलाकर और 'हां' की जोरदार आवाज लगाकर जे0 पी0 को वचन दिया। प्रदर्शनकारियों और आम जनता ने – 'हमला चाहे जैसा होगा, हाथ हमारा नहीं उठेगा' के नारे का वस्तुतः पालन करके जे0

पी0 को दिखा दिया। लोग एकदम शान्त हो गये, ऐसा था जे0 पी0 का प्रभाव और उनके नेतृत्व में चल रहे आन्दोलन का अनुशासन।

जे0 पी0 के निकट सहयोग एवं प्रख्यात् चिन्तक आचार्य राममूर्ति के अनुसार– 'पांच जून के विशाल प्रदर्शन को देखकर ऐसा लगा जैसे पूरा बिहार खड़ा हो गया है और जनता किसी अज्ञात नियति की ओर बढ़ने को आतुर है। सारे संघर्ष ने 'सत्ता बनाम जनता' का रूप ले लिया। पांच जून, आन्दोलन में नए मोड़ का दिन था। वह एक विशेष दिन था जब बूढ़े और बीमार जे0 पी0 हस्ताक्षरों के बण्डल ट्रक पर लादकर राज्यपाल के घर गए। इन हस्ताक्षरों में इस बात की घोषणा थी कि प्रचलित सत्ता में जनता का विश्वास नहीं रहा और इस बात की भी परोक्ष घोषणा थी कि उसे विश्वास है जे0 पी0 और उनके आन्दोलन पर।'

पाँच जून, 1975 की विशाल सभा में जे0 पी0 ने पहली बार 'संम्पूर्ण क्रांति' के दो शब्दों का उच्चारण किया। क्रांति शब्द नया नहीं था, लेकिन 'सम्पूर्ण क्रांति' नया था। गांधी परम्परा में 'समग्र क्रांति' का प्रयोग होता था। 'मूवमेण्ट' और 'एजिटेशन' में अन्तर है। पांच जून के पहले जो कुछ था वह 'एजीटेशन' था। पांच जून को 'मूवमेण्ट' की शुरूआत हुई। जब एजीटेशन था तब छात्रों, युवकों की कुछ तात्कालिक मांगे थी, जिन्हें कोई भी सरकार जिद न करती तो आसानी से मान सकती थी। लेकिन पांच जून को जे0 पी0 ने घोषणा की :– भ्रष्ट्राचार मिटाना, बेराजगारी दूर करना, शिक्षा में क्रांति लाना, आदि ऐसी चीजें हैं जो आज की व्यवस्था से पूरी नहीं हो सकती हैं क्योंकि वे इस व्यवस्था की ही उपज है। वे तभी पूरी हो सकती हैं जब सम्पूर्ण व्यवस्था बदल दी जाए। और, सम्पूर्ण व्यवस्था के परिवर्तन के लिए क्रांति– 'सम्पूर्ण क्रांति' आवश्यक है। इस व्यवस्था ने जो संकट पैदा किया है वह सम्पूर्ण और बहुमुखी (टोटल एण्ड मल्टीडाइमेंशनल) है, इसलिए इसका समाधान सम्पूर्ण और बहुमुखी ही होगा। व्यक्ति का अपना जीवन बदले, समाज की रचना बदले, राज्य की व्यवस्था बदले, तब कहीं बदलाव पूरा होगा और मनुष्य सुख और शान्ति का मुक्त जीवन जी सकेगा।

..... जे0 पी0 का 'सम्पूर्ण' गांधी का 'समग्र' है।

आंदोलन का चौथा दौर

बिहार छात्र आंदोलन का चौथा चरण सात जून, 1974 से जयप्रकाश नारायण के इस आह्वान के अनुसार प्रारम्भ हुआ कि 'हमें सम्पूर्ण क्रांति चाहिए, इससे कम नहीं।' 'विधान सभा भंग करो।' के स्थान पर 'विधान सभा भंग करेंगे' के नारे के साथ अहिंसक एवं शान्तिपूर्ण ढंग से सत्याग्रह, धरना आदि का कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। जे0 पी0 द्वारा निर्देशित आंदोलन का कार्यक्रम निम्न प्रकार था :–

1. विधान सभा भंग करने का अभियान चलाना
2. विधान सभा के सभी फाटकों पर सत्याग्रह और धरना आयोजित कर सदस्यों को अन्दर न जाने देना।
3. सचिवालय से लेकर ब्लाक स्तर तक प्रशासनिक कामकाज एकदम ठप्प कर देना।
4. अपनी मांगों की पूर्ति के लिए प्रदर्शन, सत्याग्रह कर जेल जाना।

छात्र संघर्ष समिति द्वारा विधायकों के इस्तीफे की मांग

छात्र संघर्ष समिति ने विधान सभा के समक्ष धरना प्रारम्भ करने के पूर्व सभी दलों के विधायकों से त्याग पत्र देने की मांग की और घोषित किया कि बिहार विधान सभा को भंग करने की मांग को लेकर धरने का कार्यक्रम एक सप्ताह तक चलेगा। यदि तब तक विधायकों ने इस्तीफे नहीं दिये तो 12 जून से उनके घरों का घेराव किया जाएगा।

बिहार में आंदोलन नए चरण में पहुंच गया। सम्पूर्ण प्रदेश की जनता संघर्ष करने की मनःस्थिति मे आती जा रही थी। वहीं इस आंदोलन में छात्रों के समर्थक गैर–कम्युनिस्ट विपक्षी दलों में वैचारिक, रणनीति संबंधी एवं संगठनात्मक संकट गंभीर हो गया। हुआ यह कि इन दलों के अनेक विधायकों ने पांच जून की अंतिम तिथि बीत जाने के बावजूद अपनी पार्टी के नेतृत्व द्वारा दिए गए निर्देश के बावजुद विधान सभा की सदस्यता से त्याग पत्र नहीं दिया।

विधान सभा के 24 सदस्यीय जनसंघ गुट के विधायकों में लालमुनि चौबे ने अगुवाई की और उनके सहित 12 विधायकों ने विधान सभा की सदस्यता से त्याग पत्र दिया, पर आठ जनसंघी विधायकों ने पार्टी के निर्देश को ठुकरा दिया। जनसंघ ने इस आठ विधायकों तथा तीन अन्य को पार्टी से छः वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया। शेष एक विधायक ने उसी दिन त्याग पत्र दे दिया। तेरह सदस्यीय संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के 7 विधायकों ने इस्तीफा दिया, अन्य ने नहीं दिया। विधान सभा अध्यक्ष हरिनाथ मिश्र के अनुसार उस समय तक केवल 19 विधायकों ने इस्तीफे दिए थे, जिन्हें वे स्वीकार कर चुके थे। संगठन कांग्रेस ने निर्णय किया कि उसके विधायकों के इस्तीफे का प्रश्न 15 व 16 जून को कलकत्ता में हो रही कांग्रेस संगठन 'महासमिति' की बैठक तक स्थगित रहेगा तथा इस मामले पर हाई कमान से विचार किया जाएगा। इस प्रकार कांग्रेस के 23 विधायकों में से किसी ने इस्तीफा नहीं दिया।

विधान सभा के सामने सत्याग्रह, 53 सत्याग्रही गिरफ्तार

सात जून को पटना में बिहार विधान सभा के समक्ष छात्र संघर्ष समिति, सर्वोदय मण्डल तथा गैर–कम्युनिष्ट विपक्षी दलों की ओर से धरना दिया गया। धरने के दौरान विधायकों को विधान सभा में जाने से रोकने पर 53 सत्याग्रही गिरफ्तार किए गए, जिनमें सर्वोदय नेता रामनन्दन सिंह, जन संघ के नेता विजय कुमार मिश्र तथा छात्र नेता विद्यानन्द तिवारी शामिल थे।

इसी दिन बिहार छात्र संघर्ष समिति की संचालन समिति ने छात्रों का आह्वान किया कि वे एक वर्ष तक अपनी कक्षाओं का बहिष्कार करें और श्री जयप्रकाश नारायण के आंदोलन में शामिल हों। राज्य के विभिन्न जिलों के छात्रों द्वारा जिलाधीश कार्यालयों, अन्य सरकारी दफ्तरों से लेकर ब्लॉक मुख्यालयों पर धरना प्रदर्शन आदि करने का कार्यक्रम क्रियान्वित किया गया।

बिहार सरकार के मंत्री दरोगा प्रसाद राय ने घोषणा की कि विधायकों के निवास स्थान को 'सुरक्षित क्षेत्र' घोषित कर वहाँ पुलिस का पहरा रहेगा। अनाधिकृत व्यक्तियों के जाने पर रोक लगाई जाएगी और मिलने वालों की पूरी जांच की जाएगी।

संदर्भ सूची :–

1. बिहार सामान्य ज्ञान विशेष जानकारी – फाइल नं0 – 12 आधुनिक प्रकाशन, इलाहाबाद पृ0 – 120
2. बिहार सामान्य ज्ञान विशेष जानकारी – फाइल नं0 – 12 आधुनिक प्रकाशन, इलाहाबाद पृ0 – 120
3. बिहार सामान्य ज्ञान विशेष जानकारी – फाइल नं0 – 12 आधुनिक प्रकाशन, इलाहाबाद पृ0 – 121
4. Socialism, Sarvodaya and Democracy, edited by Bimal Prasad Asia Publishing House Bombay 1964.
5. Nation - Building in India, edited by Brahmanand Navchetna Prakashan Varansi 1974.